Artistic Narration Vol. XIV No. 2 July-Dec. 2023 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

गुजरात, प्रभासपाटन के सोमनाथ मन्दिर का कलात्मक अध्ययन

पूनम बघेल
शोधार्थी
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट, आगरा

डॉ० नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट, आगरा
ईमेल : natyagi09@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

पूनम बघेल,
डॉ० नमिता त्यागी

गुजरात, प्रभासपाटन के सोमनाथ मन्दिर का कलात्मक अध्ययन

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 2,
Article No. 17 pp. 123-131

Online available at:
https://anubooks.com/
journal/artistic-narration

सारांश

भारतीय कला भारत वर्ष के विचार, धर्म, दर्शन एंव तत्वज्ञान का दर्पण है। ललित कलाओं में मूर्तिकला का एक विशिष्ट स्थान है। प्राचीन समय की भाँति ही आज भी कला में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के प्रतीक मूर्तियों का अभिव्यक्तिकरण आनंद, प्रेम आदि का उद्देश्य चरित्रार्थ की उन्नति करना तथा मानव को सुख शान्ति प्रदान करना है।

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक अनेकों साम्राज्य बदले या सम्पूर्ण नष्ट होते गये, परन्तु उस समय की संस्कृति और परम्परा आज भी अनेक स्थानो पर बिखरे मूर्ति शिल्पों के रूप में पूण सुरक्षित हैं जो सम्पूर्ण भारत में फैले हुये हैं। शिल्पकला परम्परागत रूप से वैदिक शिल्पियों से विकसित हुई। मूर्तियों को स्थापित करने के उद्देश्य से मंदिरों का निर्माण हुआ। मंदिर निर्माण की यह कला राजाश्रय पाकर अधिक मुखरित हुई तथा समय के साथ विकसित होती गई। भारत मंदिरों का देश है। समूचे देश मे विभिन्न देवी–देवताओं के मंदिर स्थापित हैं। प्राचीन समय से ही प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करने के लिये अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ। यहीं से मूर्तिकला का इतिहास सृजित हुआ। सम्पूर्ण भारत में फैले ये विशाल मंदिर भारत की समृद्वशाली संस्कृति के घोतक हैं। 11वीं शताब्दी के गुजरात, राजस्थान चरमोत्कर्ष युग के प्रायः सभी मन्दिर ध्वस्त व जीर्ण हैं। इन मन्दिरों में गुजरात प्रभास पाटन का सोमनाथ मन्दिर प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। भारतीय मुर्तिकला के इतिहास में अनेक गौरवशाली पन्ने हैं। उन्हीं में से एक गौरवपूर्ण गाथा गुजरात सौराष्ट्र स्थित प्रभास पाटन के सोमनाथ मंदिर की भी स्वर्णाकिंत है।

गुजरात जिसे पहले सौराष्ट्र नाम से जाना जाता था जो भारत के पश्चिमी भाग में समुद्र तट पर बसा एक राज्य है। इस राज्य में 26 जिले हैः– जिनमें से एक–प्रभासपाटन भी है। प्रभासपाटन गुजरात राज्य के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र में समुद्र के किनारे पर बसा एक छोटा–सा गाँव है। प्रभास का क्षेत्रफल 109 एकड़ व 20 गुंठा है। नगर के दक्षिणी ओर समुद्र है तथा समुद्र के तट पर ही सोमनाथ मन्दिर है। 10वीं शताब्दी के बाद राजनैतिक विधटन स्वरूप इस क्षेत्र में अधिक विकास नहीं हुआ। जिसका प्रमुख कारण राजनैतिक विधटन रहा। स्वतन्त्रता के बाद सरदार बल्लभ भाई पटेल ने प्रभास तीर्थ का पुनः निर्माण कराया। आधुनिक समय मे सोमनाथ मन्दिर तथा आस–पास के तीर्थ स्थानों की देख–रेख व जीर्णेद्वार का कार्य सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है।

प्रभा सपाटन तीर्थ देश के प्राचीनतम तीर्थ स्थानों मे से एक हैं। इसका उल्लेख स्कंदपुराण, श्रीमद् भागवत गीता, शिवपुराण आदि प्राचीन ग्रन्थों में भी है। ऋग्वेद में भी सोमेश्वर महादेव की महिमा का उल्लेख है। सोमनाथ बारह ज्योर्तिलिंग में से प्रथम ज्योर्तिलिंग माना जाता है। पौराणिक कथानुसार इस ज्योतिंलिग को स्वयं चन्द्रदेव ने स्थापित किया था। भगवान ब्रह्म के पुत्र दक्ष की सत्ताई सपुत्रियाँ (सत्ताईस नक्षत्र) थी। उनका विवाह चन्द्रदेव के साथ हुआ दक्ष की छब्बीस पुत्रियों ने पिता से शिकायत की, कि चन्द्रदेव सिर्फ रोहिणी को प्रेम करते हैं बाकी किसी पर ध्यान नहीं देते इस पर क्रोधिंत होकर दक्ष ने चन्द्रदेव को श्राप दिया कि वहभास (कान्ति) हीन हो जाये। श्राप स्वरूप चन्द्रदेव क्षयरोग से ग्रस्त हो गये। तब वे ब्रह्म की शरण में गये तथा निवारण हेतु उपाय पूछा ब्रह्म ने उन्हें कहा कि तुम सरस्वती के मुहाने (तट) पर अरब सागर (सिन्धु सागर) स्नान कर के, वही पर मृत्युजंय मन्त्र का विधिपुर्वक जाप से शिवलिंग अधिष्ठितकर आराधना करें, चन्द्र ने शिव की आराधना की तथा छः माहतक घोर तप किया जिससे प्रसन्न होकर शिव यहाँ अवतरित हुये तथा चन्द्र देव का उद्धार किया। शिव भक्त चन्द्रदेव ने यहाँ पर स्वर्ण मन्दिर बनवाया तथा यहाँ पर जो शिवलिंग स्थापित हुआ उसका नाम सोमनाथ

प्रसिद्व हुआ जिसका अर्थ है–"चन्द्र के स्वामी" चन्द्रमा ने यहाँ पर अपनी कान्ति (भास) पुनः प्राप्त की थी जिस कारण से इस क्षेत्र को प्रभासपाटन कहा जाने लगा।

ईसा की प्रथम शताब्दी में पशुपत शैव सम्प्रदाय के संस्थापक लकुलीश ने यहाँ पर मुख्य पहला सोमनाथ मन्दिर बनवाया था। गुजरात में चालुक्य वंश की स्थापना मूल राज प्रथम ने (941–955 ई० में) की थी। उसने सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्वार तथा सिद्वपुर में रुद्रमाला/रुद्रमहल मन्दिर (प्रतिकृति) बनवाना शुरू किया, किन्तु पूरा न हो सका जिसे बाद में उस के वंशजों ने पूर्ण करवाया। मण्डाली स्थित सोमेश्वर मन्दिर भी मूलराज द्वारा ही बनवाया गया।

भीमदेव ने प्रभासपाटन में सोमनाथ के कीर्तिमान मन्दिर का जीर्णोद्वार करवाया उस समय (1024ई० में) अरबी लेख कअलब रुनी सौराष्ट्र दौरे पर आया था। उस समय सोमनाथ मन्दिर के छप्पन स्तम्भों पर खडा था। उसने अपनी पुस्तक "तहकीक–ए–हिन्द" (भारत की खोज) में सोमनाथ मन्दिर तथा सौराष्ट्र की समृद्वि का विवरण प्रस्तुत किया, जिससे प्रभावित होकर महमूद गजनवी ने 1025–26ई० में सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण कर लूटा तथा ध्वसं कर दिया मन्दिर में मिली सम्पत्ति का मूल्य बीस लाख दीनार आंका गया इस सारी सम्पत्ति को महमूद ले गया मारे गये लोगों की संख्या पचास हजार से अधिक थी (इब्न असीर) किन्तु भीम ने पुनः सोमनाथ का निर्माण कराया। इसी प्रकार जयसिहं सिद्वराज (1099–1143ई०) इस वंश का प्रसिद्व राजा बना जो कर्ण का पुत्र था। सिद्वपुर का रूद्रमाला/रूद्रमहल व पाटन में सहस्त्रलिंग नामक कृत्रिम झील का निर्माण जय सिहं ने ही कराया था। कुमरपाल ने भी सोमनाथ मन्दिर का पुनः जीर्णोद्वार कराया था। कुतुब्बुद्दीन का आक्रमण 1178ई० में पाटन (गुजरात) पर हुआ। 1286 ई० में राजा सारंगदेव बघेल के निर्देशानुसार पाशुपत आचार्य त्रिपुरान्तक ने मन्दिर निर्माण कार्य आगे बाढ़ाया। राजपुत राजाओं के शासक के बाद गुजरात में मुस्लिम शासकों का उदय हुआ तथा यहाँ मुस्लिम शासकों ने लगभग 150 वर्षों तक शासन किया इस दौरान मन्दिर को कई बार अपवित्र किया गया तथा मस्जिद में रूपान्तरित भी कर दिया। सुल्तान अलाउद्वीन (1296–1316ई०) और तुगलक (1320–1407ई०) की हुकूमत गुजरात में 1407 ई० तक रही। अकबर ने गुजरात विजय के पश्चात् सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्वार तथा नवीनीकरण कराया। औरंगजेब ने 1665 ई० में हिन्दू मन्दिरों कों तोडने का आदेश दे दिया था। जिसमे सोमनाथ मन्दिर, बनारस विश्वनाथ मन्दिर तथा वीर सिंह देव द्वारा निर्मित मथुरा केशव राय मन्दिर प्रमुख थे। 1783ई० में महामयी अहिल्या बाई होल्कर ने मुख्य मन्दिर से कुछ दूर हटकर एक नये मन्दिर का निर्माण काराया जिसे प्राचीन सोमनाथ नाम से जाना जाता है। 13 नवम्बर 1947ई०में स्वतन्त्रता पश्चात् भारत के तत्कालीन उप प्रधानमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने प्राचीन खण्डहरों पर पुनः नये मन्दिर बनवाने की प्रतिज्ञा लीं 1950ई० में जामनगर के पूर्व महाराजा एच.एच. जाम साहब ने नींव रख कर मन्दिर की स्थापना की तथा के.एम मुंशी द्वारा मन्दिर अवशेषों का विधिपूर्वक खण्डन किया। दिनांक 11–5–1951 ई० को भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सोमनाथ की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

मध्यकाल की प्रान्तीय शैलियों में सबसे अधिक सुन्दर और कलात्मक शैली गुजरात की है। यहाँ प्राचीनकाल से बडे–बडे सुन्दर जैन और हिन्दू मन्दिर बनते थे। जिनमें सुरूचि पूर्ण ढंग से काटे हुये खम्बे, सर्पाकार तोडे, छज्जे, समतल छतें प्रसादिकाऐं और वप्रो का प्रयोग होता था। वास्तव में बात यह है कि गुजरात में लकडी के स्थापत्थ का चलन अधिक था और रचना के ये सारे अंग लकड़ी में बनते थे। लकड़ी में इन्हें सुन्दर से सुन्दर ढंग में काटा और सजाया जाता था। पत्थर का प्रचार होने पर लकड़ी के इन्हीं तत्वों को पत्थर में अनुवादित कर दिया गया। गुजरात की स्थापत्य (वास्तु) शैली प्रान्तीय शैली में सर्वोत्कृष्ठ हैं।

गुजरात की इस शैली को चालुक्य अथवा नागर शैली भी कहा जाता है। नागर प्रसाद आधार से शिखर तक चौपहला या वर्गाकार होता है। चौकोन गर्भ ग्रह के ऊपर शिखर दूर ऊँचे मीनार की भाँति बने होते है, उनके शिखर की रेखाएं तिरछी और चोटी की ओर झुकी होती है। "कालिकागम" मे उसके लक्षण इस प्रकार दिये गये हैः ऊँचाई में यह अष्टवर्ग होता है। ये आठों वर्ग क्रमशः मूल, मसरक, जंघा, कपोत ये चारों खंड शिखर, गल, आमलक और कुंभ का भार धारण करते हैं।

सोमनाथ मन्दिर

नगर (चालुक्य) शैली में निर्मित सोमनाथ मन्दिर गुजरात राज्य के जूनागढ स्टेशन से 27 कि॰मी॰ वेरावल स्टेशन से 07 कि॰मी॰ तथा प्रभासपाटन के सोमनाथ रेलवे स्टेशन से 02 कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर अपने सौन्दर्य पूर्ण तथा विशिष्ट कौशल पूर्णमूर्ति सम्पदा के लिये न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। जनश्रृति के अनुसार सोमनाथ मन्दिर के चारों ओर 12 सूर्य मन्दिर पाटन की सीमा पर बने थे जिनका वास्तु शास्त्र की दृष्टि से विशेष महत्व था। परन्तु अब केवल 2 मन्दिर ही शेष है। जो कि जर्जर अवस्था में हैं।

श्री द्विग्विजय द्वार

मन्दिर के प्रागंण का मुख्य द्वार द्विग्विजय द्वार कहलाता है। द्विग्वंजय द्वार के बाहरी ओर भी विशाल प्रागंण है इस प्रागंण के बीच में सरदार बल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा प्रति स्थापित हैं। इसी प्रागंण के एक ओर समुद्र दर्शन पर्यटन स्थल है तथा दूसरी ओर एक दीवार है। जिस पर अनेकानेक चित्र बने हैं। द्विग्विजय द्वार की लम्बाई 51 फुट, चौड़ई 31 फुट तथा ऊँचाई 51 फुट है।

मन्दिर प्रागंण

सोमनाथ मन्दिर प्रागंण का क्षेत्रफल 32000 वर्ग फुट है। मन्दिर की सुरक्षा हेतु बाउण्ड्री बनी है। जिस पर दायीं ओर एक स्तम्भ तथा तीर बना है। जो सूचित करता है कि–दक्षिण ध्रुव और सोमनाथ मन्दिर के बीच में भूमि का कोई भाग नहीं है। मन्दिर प्रागंण में मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त पार्वती मन्दिर अवशेष, कशार्दि विनायक मन्दिर, कष्ट भंजन हनुमान मन्दिर, संर्कीतन भवन, हवन मण्डप तथा शिव के 18 रूपों से सुशोभित एक गैलरी है। मन्दिर प्रागंण में एक वट वृक्ष भी है जिसका लोग परिक्रमण करते हुये धागा लपेटते है तथा मुरादें मांगते है। मुख्य सोमनाथ मन्दिर प्रागंण के बीच में ठोस चिनाई वाले अधिष्ठान पर बना है। मन्दिर की ऊँचाई 151

फुट है। मन्दिर दो प्रकार के पत्थरों से निर्मित है। स्थानीय बलुआ पत्थर तथा चुना पत्थर। मन्दिर स्तम्भों पर टिका है, सम्पूर्ण मन्दिर में लगभग 200 स्तभ हैं।

विविध मूर्ति शिल्प उत्कीर्ण हैं। मन्दिर की छतों को पर्वत शिखरों के ढंग से बनाया गया है। शिखर क्रमशः ऊँचाई में बने हैं। मन्दिर की छत शिखरों से सुशोभित तथा कलशों से सुसज्जित है।

मकरतोरण

मुख्य मन्दिर के प्रवेशद्वार को मकर तोरण कहते हैं। जो मकर मुख व उसके विभिन्न अंलकरणों से सुशोभित होता है। प्रवेश द्वारों पर मकर तोरण के ऊपर श्रृंगार मठ बने हैं। जिन पर शिव सन्दर्भ में मूर्ति शिल्प उत्कीर्ण हैं। मन्दिर की अन्तरिक छतों पर भी बहुसख्यंक मूर्तियाँ उत्कीर्ण है। मन्दिर के वास्तु तथा मूर्तिशिल्प का रूप अत्यन्त सुसंगत तथा निखरा है।

मन्दिर का आन्तरिकभाग

प्रवेश द्वार – मुख्य मन्दिर के प्रवेश द्वार को मकरतोरण कहते हैं। जो मकरमुख व उसके विभिन्न अंलकरणों से सुशोभित होता है।

नृत्यमण्डप/अर्द्धमण्डप – अर्द्धमण्डप प्रवेश द्वार से अन्दर की ओर जाते हुऐ निर्मित है। अर्द्धमण्डप जो की सभा मण्डप तथा गर्भग्रह से पहले पड़ता है।

सभामण्डप/गुटमण्डप – मन्दिर के भीतरी भाग में गर्भग्रह/मुख्य प्रतिमा मण्डप है। जिसके मध्य में मुख्य प्रतिमा सोमनाथ शिवलिंग/ज्योर्तिलिंग स्थापित है। गर्भग्रह के बाहरवमती (परिक्रमण गैलरी), से पूर्व (पहले) सभा अथवा गुटमण्डल, नृत्य मण्डप मन्दिर आदि बने हैं। जो एक–दूसरे से अलग नहीं दिखाई देते वरन् एक–दूसरे से (जुडे) ओत–प्रोत होने के कारण एक ही सुंसगत वास्तु का रूप धारण कर लेते हैं।

गर्भगृह – जहाँ मुख्य प्रतिमा ज्योर्तिलिंग/शिवलिंग प्रतिस्थापित होती है, गर्भग्रह कहते है।

सोमनाथ मन्दिर के सौन्दर्यपूर्ण मूर्तिशिल्प

सोमनाथ मन्दिर के सौन्दर्यपूर्ण मूर्तिशिल्पों से पूर्ण रूप से आच्छादित है। मन्दिर के अन्दर–बाहर बहुसंख्यक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। सम्पूर्ण मन्दिर में लगभग चार हजार मूर्तिशिल्प का उत्कीर्ण किये गये हैं। सोमनाथ मन्दिर में उपलब्ध बहुसंख्यक मूर्तियों को विषयों के आधार पर विभिन्न वर्गों में बांटा जा सकता है।

शिवलिंग/ज्योर्तिलिंग देवी–देवताओं व पौराणिक धर्मग्रन्थों से सम्बन्धित दृश्य सुर–सुन्दरी व अप्सराओं के दृश्य पशु–पक्षियों के दृश्य अलंकरण विविध प्रतीक।

शिवलिंग

मुख्य प्रतिमा रूप में गर्भ ग्रह स्थापित हैं। यह राज लिंग काले पत्थर से गढ़ कर तैयार किया गया था। यह अपनी मोटाई से 3गुना लम्बा होता है इसके निचले भाग को ब्रह्मलिंग, मध्य भाग को विष्णुलिंग तथा ऊपरी भाग को शिवलिंग माना जाता है। जो त्रिपुंड को व्यक्त करता है। घेरा जो शिवलिंग के चारों ओर बना होता है उसका निकास उत्तर दिशा की ओर होता है।

देवी–देवताओं व पौराणिक धर्मग्रन्थों से सम्बन्धित दृश्य

देवी–देवताओं व पौराणिक धर्मग्रन्थों से सम्बन्धित दृश्य मन्दिर पर उत्कीर्ण बहु संख्यक मूर्तिशिल्पों में अनेकों हिन्दू देवी देवताओं तथा पौराणिक धर्मग्रन्थ से सम्बन्धित दृश्य उत्कीर्ण किये गये हैं। सृष्टि निर्माण कर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु, संहारक शिव/रूद्र प्रमुख है। इनके अतिरिक्त पृथ्वी के उद्धारक वाराह, ईशान–ईश, पार्वतीपुत्र गणेश व कार्तिकेय, ऋषि मुनि आदि उत्कीण है।

सुर बालाऐं तथा अप्सराऐं

अप्सराऐं स्वर्ग में देवों का मनोरंजन करती हैं उनकी अनुकृति देवालयों के शिल्पों में की जाती हैं। पश्चिम भारत के नागरादि शिल्पग्रन्थ 'क्षीरार्णव' और 'दीपार्णव' में उनके नाम और स्वरूप लक्षणों के साथ वर्णितहैं जिनमें कुछ नाम निम्न है :–

भावानुसारती नाम्नाकन्य बंधः स उच्यतेअलसा, तोंरणा,
मुग्धा, मानिनी, डालमलिका ।।
पदमगंधा, दर्पणा च विन्यासा ध्यानकर्शिता, केतकी
भरणा, दिव्या, मातृभूतिः तथैवच
चामरा, गुंठना, मुख्या नर्तकी, शुकसारिका, नूपुरवाटिका, राम्या, मर्दला, बाति शोभना ।।
एता शोड्शा मुख्यास्थुरलसा बंधभेदता ।।

पशु–पक्षियों के दृश्य

मन्दिर पर बने पशु पक्षियों की आकृतियों में घोड़े, सिंह, हाथी, नन्दी, मोर, तोता, चूहा, हिरण आदि हैं। अनेक सिंह आकृतियों को श्रृंगार मठों पर बैठे हुये उत्कीर्ण किया गया है। जो कि चारों दिशाओं की ओर मुख करके जागरूक व सजक भाव के साथ उत्कीर्ण किये है।

अलंकरण

मन्दिर के अंलकरणों हेतु शिल्पकारों ने बेलबूटे, फुल्ले, मकरमुख, वराहलिका, कलश, मकरतोरण, ग्रासधर आदि को अति सूक्ष्मता के साथ उत्कीर्ण किया है।

मकर तोरणों तथा मकर मुख को प्रवेश द्वार पर उत्कीर्ण किया है। ग्रासधर को मन्दिर की दिवारों पर सब से नीचे उत्कीर्ण किया गया है।

विविध प्रतीक

शिवतांडव– शिव का तांडव नृत्य सृजन तथा विनाश का प्रतीक माना जाता है। नृत्यरत शिव को नट राज कहा जाता है।

कलश– समृद्ध पूर्ण घट सुख सम्पत्ति और जीवन की पूर्णता का प्रतीक है।

ऊँ– आध्यात्मिक उत्थान एवं आधात्मिक शक्तियों के विकास हेतु, ओम शब्द का उच्चारण किया जाता है। अ–ए–म अर्थात् ओम में 'अ' जाग्रत अवस्था 'उ' स्वप्नावस्था तथा 'म' निद्रावस्था का प्रतीक माना जाता है। सृष्टि संचालन के तीन तत्व–ताप, ध्वनि तथा प्रकाश ओम से प्रस्फुटित होते हैं। यह शब्द ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सृजनात्मक, रक्षात्मक और ध्वंसात्मक शक्तियों का प्रतीक है; सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय तीनों शक्तियों का प्रतीक यह ओम महामन्त्र असीम महिमामय है।

मकर– समुद्र का वरूण (जलाधिराज) का प्रतीक था जिसके मुख कुहर से विनिर्गत होती हुई अनेक पद्यलताएँ कला में अंकित की जाती हैं मकर को उस सम्पत्ति का प्रतीक माना जाता है जो शस्त्रों के व्यापार से प्राप्त होती थी मकर पहले असुरों के अधिपति वरूण का वाहन या आगे चल कर वह देव नदी गंगा का वाहन मान लिया गया।

ज्योर्तिलिंग– ज्योर्तिलिंग को प्रकाश का स्तम्भ माना जाता है, क्योंकि कोई भी देव ऐसा नहीं जिसका स्वरूप ज्योति न हो ऐसे ही कोटि–कोटि दिव्य सूर्यों से बना महान ज्योर्तिलिंग है जिसे शिव का अग्नि स्कन्द रूप भी कहते हैं।

त्रिशूल– त्रिशूल को तीन पुर पृथ्वी, अन्तरिक और द्यु इन तीन लोकों का सत, रज, तम इन तीन गुणों को प्रतीक रूप में तीन शूलों का लक्षण माना गया है।

कुमार– कुमार को ऋग्वेद में उन्हें नृत्य कहा है। वहीं कुमार अद्भुत वीर, देव, सेना का पति, अग्नि का पुत्र, गंगा का पुत्र, विराट प्राण या जीवन तत्व का प्रतीक है।

कूर्म– यह भी वैदिक प्रती कथा द्युलोक और पृथ्वी दोनों के सम्पुट का सूचक था। देव प्रतिमाओं के आयुध/शस्त्रों की भी आख्या की जा सकती है। उनके आयुध शक्ति अथवा विशेष गुण का प्रदर्शन करते हैं। वे किसी शक्ति क्रिया या गुण के प्रतीक स्वरूप ही बनाये जातें हैं।

सोमनाथ मन्दिर के मूर्तिशिल्प की विशेषताऐं

- मन्दिर के मूर्तिशिल्प में शिल्प शास्त्रीय नियमों व मूर्ति के नाप पर विशेष ध्यान दिया गया है। मन्दिर के मूर्तिशल्पों में शिव प्रतिमाऐं सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त अन्य देवी–देवताओं सुर बालाओं, दैत्य–दानवो, नृत्य गायन, आलिंगन, पौराणिक व धार्मिकग्रन्थों से सम्बन्धित दृश्यों को भी उत्कीर्ण किया गया है।
- अंलकरणों में बेल बूटे, फूल, पशु–पक्षी, मकरमुख, कलश, ग्रास तथा ज्यामितीय आकारों को भी गत्यात्मकता तथा लयात्मकता के साथ उत्कीर्ण किया गया है। तथा विविध प्रतीकों को धातु में भी उत्कीर्ण किया है।
- देवी–देवताओं को बड़े आकार का निरूपित किया गया है। अप्सरा तथा सुर–बालाओं को आदमकद से छोटे आकार का बनाया गया है तथा मानवाकृतियों को अप्सराओं से छोटे आकार में उत्कीर्ण किये गया है। शास्त्रीय नियमों को ध्यान में रखते हुये शिल्पकारों ने गजधर को 1 फुट, अश्वधर को 7 इंच, नरधर को 6 इंच तथा ग्रासधर को 5 इंच की चौड़ी पंक्तियों में उत्कीर्ण किया गया है। मूर्ति शिल्पप्रायः अर्द्धनग्न है जो परम् सौन्दर्य से परिपूर्ण अद्भूत लालित्य लिये हुये हैं।
- मन्दिर की वास्तु व्यवस्था अत्योचित् तथा भव्य है। सागरीय जलाधार तट पर स्थित सोमनाथ मन्दिर का वातावरण अति मोहक है।

भाव– भंगिमाभावों के उदय से ही शरीर तथा इन्द्रियों में भंगिमाऐं/विकार उत्पन्न होती हैं–

शरीरेन द्रियवर्गस्य विकारणां विधामकाः भाव विभावज निताशिचतवृतय ईरिताः।।

- मूर्तिकारों ने प्रतिमाओं को आसनबद्ध तथा समपाद, आभंग, त्रिभंग तथा अतिभंग जैसी अनेक मुद्राओं में निरूपित किया है। शारीरिक स्थिति हस्त मुद्रा, अंग व उपांगों की स्थिति कमनीय व लोचपूर्णहै। मूर्तिशिल्पों के विशय सुख में प्रवृत होने का भाव दर्शाते हैं।
- शिल्पियों ने स्थानीय पत्थरों की शिलाओं को छैनी व हथेड़ी की सहायता से काट कर तथा तराश कर उन्हें वंछित रूप प्रदान किया है।
- अंलकरणों को शिल्पियों ने व आवश्यकतानुसार कोर कर उत्कीर्ण किया है। मन्दिर की बाहरी दीवार पर बने ''आलों'' में आकृतियों को कम उभारकर निरूपित किया है तथा मुख्य शिव प्रतिमाओं तथा मकर तोरण जैसे अंलकरणों को चारों तरफ से कोर कर अथवा अधिक उभार कर उत्कीर्ण किया गया है।
- मूर्तिशिल्पों को क्रमिक रूप से उत्कीर्ण किया गया है। स्तम्भों के ज्यामितीय आकारों में बनाया गया है। जिनके अग्र भाग पर बड़े मूर्तिशिल्पों को उत्कीर्ण किया गया है तथा दायें–बायें बनी शिल्पा कृतियों को अपेक्षाकृत छोटा निरूपित किया है, उचित परिप्रेक्ष्य तथा प्रतिमाओं के बीच सामंजस्य परिलक्षित हो।

निष्कर्ष/उपसंहार

'कलानां प्रवरंचित्रं धर्म का मार्थ मोक्षदम'

अर्थात् कला के द्वारा अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। भारतीय ग्रन्थों में अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ये चार मूल पुरूषार्थ माने गये हैं। भारतीय कला भी जीवन के इन्ही मूलभूत रूपों को प्रस्तुत करती है।

गुजरात का प्रारम्भ से ही कला क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रहा है। गुजरात की कला शैली विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी, परन्तु तुर्को के आगमन के कारण आकर्षण के इस केन्द्र को लूटा व धराशायी कर दिया तथा सामाजिक उथल–पुथल के कारण भारतीय संस्कृति व परम्परा में हलचल मच गई। तुर्कों/मुगलों ने गुजरात की कला शैली को अपने धार्मिक स्थापत्य से जोड़ दिया इस प्रकार कला शैली को यह परम्परा समाप्त नही हुई तथा उसे एक नई दिशा मिली। अन्य देशों से आये भारतीय संस्कृति ने उन्हें आत्मसात कर लिया साथ ही अपनी परम्परागत शैलियों को अपनाये रखा, सौन्दर्य की सृजक यह गौरवमयी भारतीय संस्कृति अपनी सौन्दर्यमयी अनुभूति का स्वयं ही परिचय देती है।

Heahal rightly said that "The absolute ideal realuzaungit self."

"मूल्यवान/उत्तम विचार अपनी दिव्यता की अनुभूति स्वयं कराते हैं।"

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उपाध्याय, डॉ० वासुदेव शरण. (1982). भारतीय मूर्ति विज्ञान. सुरभारती प्रकाशनः चौखम्भा, वाराणसी।
2. कपूर, सुभाशिनी. (1990). गुजरात की लोक संस्कृति की झलक. सन्मार्ग प्रकाशन।
3. पाठक, शोभनाथ. (1999). संस्कृतिक प्रतीक कोश. प्रभात प्रकाशन।
4. मुंशी, के०एम०. (2010). जय सोमनाथ. राजकमल प्रकाशन।
5. मिश्र, डॉ० इन्दुमती. (1987). प्रतिमा विज्ञान. हिन्दी ज्ञान अकादमीः भोपाल, मध्य प्रदेश।

Bobliography

1. Agrawal, S. Vasudeva. (1964). Reprinted (1976) Heritage of India Art. Publications Division: Kartika 1890.
2. Majumadaar, A.K. (1957). Chalukya of Gujrat- Bambay.
3. Goswami, A. Indian Temple Sculpture. M.R.A.S. Henry. Cousene – SOMNATHA/OTHER Mediaval Temple-In Kathiavad Indological Book House.s